त्याग–वैराग्य

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

त्याग का अर्थ है छोड़ना। जो वस्तु छोड़ दी जाती है, जो कामनाएं छोड़ दी जाती हैं, जो बुराइयां त्याग दी जाती हैं उससे व्यक्ति मुक्त हो जाता है। त्याग भाव से आसक्ति समाप्त हो जाती है। भारतीय संस्कृति त्याग प्रधान संस्कृति है। हमारे देश में दो प्रमुख मार्ग रहे हैं– प्रवृत्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग। प्रवृत्ति मार्ग गृहस्थ के लिए है। निवृत्ति मार्ग सन्त और संन्यासियों के लिए है। संन्यासी त्यागी होता है। चाहे कोई कितना भी बड़ा आदमी हो वह संन्यासी के सामने झुक ही जाता है। त्याग भाव से तृष्णा समाप्त हो जाती है। त्याग भाव बहुत बड़ा मानवीय गुण है। संन्यासी कंचन कामिनी का त्यागी होता है। वह सब कुछ त्यागकर परमात्म पद को स्वीकर करता है। स्व और पर का भेद उसमें नहीं रहता। त्याग से व्यक्तिगत जीवन की सभी लालसाएं समाप्त हो जाती है। त्यागी पुरुष आत्मा में रमण करता है। वह समाज और राष्ट्र के लिए जीवन व्यतीत करता है। उसके लिए धन सम्पत्ति मिट्टी के समान होती है। धन की तीन गतियां होती हैं– दान, भोग और नाश। जो दान और भोग नहीं करता उसके धन की तीसरी गति होती है।

वैराग्य अनासक्ति भाव को कहते हैं। वैराग्य में किसी के साथ जुड़ाव नहीं करना चाहिए। परिग्रह की भावना नहीं रखनी चाहिए। वस्तु के प्रति आसक्ति परिग्रह है। धन दौलत अपने आप में परिग्रह नहीं है उसके प्रति आसक्ति होना परिपग्रह है। भगवान महावीर के शिष्य आनन्द ने वैराग्य भाव से सब कुछ त्याग किया। सबकी सीमा निश्चित कर दी। दीन–हीनों की सहायता करना, निर्धन को शिक्षा प्रदान कराना, अनाथालय को आर्थिक सहायता देना आदि कार्य परोपकार के कार्य हैं। परोपकार बहुत बड़ा गुण है। त्याग वैराग्य का लक्ष्य है आत्मोपलब्धि। जो आत्म भाव में रहता है वह सबसे बड़ा त्यागी है। भौतिक वस्तुएं नश्वर हैं। यह समझकर त्याग और वैराग्य वृत्ति को जागृत करना चाहिए।

आवश्यकता से अधिक संग्रह करना अतिसंग्रह है। मानव की मूलभूत आवश्यकता है रोटी, कपड़ा, शिक्षा और चिकित्सा। इसकी पूर्ति सभी को करनी चाहिए। जीवन को आराम से चलाने के लिए वस्तुओं की आवश्यकता होती है। मानव की इच्छापूर्ति न होने से वह अशांत हो जाता है। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में सम रहने से मानव शांति प्राप्त करता है। लोभी व्यक्ति अतिसंग्रह करता है। अतिसंग्रह करने से दूसरे व्यक्ति का हक छीना जाता है। दूसरों के अंश को छीनना, दूसरों को वंचित करना आदि कार्य अतिसंग्रह के कारण होते हैं। अतिसंग्रह करने से वस्तुओं की कमी होती है। इससे समाज में तनाव और अशांति पैदा होती है। अधिक धन की सुरक्षा करना भी यह कठिन कार्य है। अतिसंग्रह करने से ऊंची–ऊची कई अटालिकाएं बनाकर उसकी सुरक्षा करना कठिन कार्य है। आज कहीं–कहीं ऊंची–ऊंची अट्टालिकाएं है तो दूसरी तरफ घासफूस की टूटी–फूटी झोंपड़ी दिखाई देती है। जब गरीब का खून चूसा जाता है तभी कोई व्यक्ति अतिसंग्रह कर सकता है। व्यक्ति को संतोष धारण करना चाहिए।

संतोषरूपी धन प्राप्त हो जाने पर अन्य सभी धन धूली के समान प्रतीत होने लगते हैं। अतिसंग्रह करने वाला व्यक्ति बंधन में फंसता है। लालच के घेरे से ऐसा व्यक्ति निकल ही नहीं पाता। उसके परिवार में भी संतुलन बिगड़ जाता है। धन के ऊपर सभी की निगाहें लगी रहती हैं। धन के बटवारें को लेकर भाइयों–भाइयों में कलह छिड़ जाती है। कलुषित मनोवृत्ति लोभ के कारण होती है। लोभ के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है। मोह का वटवृक्ष बहुत बड़ा है। अच्छाइयां गुणों का परिवार है और बुराइयां मोह का परिवार है। धन कुछ है सबकुछ नहीं। धन एक साधन है साध्य नहीं। नियम कानून का पालन करते हुए संग्रह करना चाहिए।

परिग्रह एक भावना है। परिग्रह का अर्थ है चारों तरफ से ग्रहण करना। अपरिग्रह इसका विपरीत है। अपरिग्रह में आवश्यकता से अधिक नहीं ग्रहण किया जाता। अतिसंग्रह करना अशांति का कारण होता है। सही तरीके से अर्जित किया गया धन परिवार, समाज और राष्ट्र की सुरक्षा कर सकता है। अर्जन और विसर्जन संतुलन का सूत्र है। अर्जन का अर्थ है कुछ कमाना और विसर्जन का अर्थ है जो कमाया गया है उसका कुछ अंश दान में देना। मानव जीवन से लेकर प्रकृति पर्यन्त यह नियम लागू रहता है। सृष्टि में भी यह संतुलन दिखायी

देता है। सम्पूर्ण सृष्टि संतुलन के आधार पर चल रही है। अगर संतुलन गड़बड़ा जाये तो जीवन में या सृष्टि में असंतुलन आजाता है।

सृष्टि के असंतुलन का अर्थ है भूकम्प आजाना, सुनामी आ जाना और प्रकृति का प्रकोप हो जाना। इसके अनके कारण है। मानव प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। वृक्ष कटते हुए चले जा रहे हैं। उनके स्थान पर नये वृक्षों का रोपण नहीं हो रहा है, जिससे प्रकृति में असंतुलन दिखलाई दे रहा है। अगर यही प्रक्रिया जारी रही तो मानव जीवन दूभर हो जायेगा। सृष्टि की परम्परा बहुत ही जटिल है। सृष्टि में जड़ और चेतन दो तत्वों के सहयोग से संतुलन बना हुआ है।यदि साधन सम्पन्न व्यक्ति अधिक अर्जन करता रहेगा तो समाज में गरीबी बढ़ेगी, लूट, खसोट, भ्रष्टाचार, दुराचार बढ़ेगा। इससे समाज में अराजकता फैलेगी। इसलिए त्याग और वैराग्य को बढ़ावा देना चाहिए।